गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037
जुलाई-अगस्त 2023
Vol. 11, Issue 7-8

Impact Factor : 4.553

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

संपादक :
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. रेखा सोनी	7–7
2.	नई शिक्षा नीति : 2020	गट सिंह	8–12
3.	भारत में गंगा नदी संरक्षण के लिए महिलाओं का योगदान (एक भौगोलिक विश्लेषण)	डॉ. वेदप्रकाश	13–26
4.	रांगेय राघव का समकालीन कथाकारों से तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. दीपाली शर्मा	27–31
5.	समाज के निर्माण में शिक्षा की भूमिका	दीपशिखा, रेवा प्रसाद	32–38
6.	हिंदी नवजागरण पत्रकारिता का योगदान	युगल किशोर	39–44
7.	Contribution of Women in the Indian National Movement	Dr. Jaya Agrawal, Dr. Yogendra Kumar	45-49
8.	प्रकृति पूजन की लोकवादी परम्परा	सोनिका तिवारी	50–54
9.	विभिन्न दार्शनिक विचारधाराएँ एवं भक्ति मार्ग	डॉ. रीता टेटवाल	55–58
10.	ममता कालिया की कहानियों में स्त्री ('बोलने वाली औरत' कहानी के विशेष संदर्भ में)	के. एम. प्रतिभा, डॉ. सत्येन्द्र कुमार	59–61
11.	मैथिलीशरण गुप्त की काव्यभाषा में छन्द सौन्दर्य	पंकज कुमार यादव	62–65
12.	Old age village life in the 'Giligadu' Novel of Chitra Mudgal चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'गिलिगडु' में अभिव्यक्त वृद्ध ग्रामीण समुदाय जीवन	Dr. P. Ganesan	66-69
13.	कोविड-19 का राजनीतिक प्रभाव : चुनौती एवं संभावनाएं	राम अवतार	70–73
14.	राष्ट्रीयता के गौरव गायक : मैथिलीशरण गुप्त	डॉ. प्रतिभा राजहंस	74–77
15.	वेद : मानवीय मूल्य	जेताराम	78–80
16.	पश्चिमी राजस्थान मानसून अध्ययन	कैलाश प्रजापत	81–84
17.	गुप्त काल : स्थापत्य कला	जेताराम	85–87

संगम Impact Factor : 4.553
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक
Vol. 11, Issue 7-8
पृष्ठ : 32-38

समाज के निर्माण में शिक्षा की भूमिका

दीपशिखा
विद्यार्थी कक्षा–६ सत्र बी.एस.सी., सी जे पी
रेवा प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, सह लेखिका,
हिंदी विभागाध्याक्षा, सेंट फ्रांसिस डी सेल्स कॉलेज, हेब्बागोडी।

सारांश :-

भारत के सांस्कृतिक प्रवाह को समझना इसके शैक्षिक इतिहास को समझने के लिए आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा और समाज के बीच हमेशा एक संबंध रहा है। महात्मा गांधी और डॉ. अंबेडकर की मान्यताएं आज भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर लागू होती हैं। गांधी ने ष्सर्वोदयी समाजष के अपने विचार में शिक्षा को महत्व दिया, जबकि डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता प्राप्त करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा जबकि 2011 की जनगणना से पता चला कि अभी भी हमारे राष्ट्र के एक चौथाई से अधिक भारतीय आबादी पढ़ने या लिखने में असमर्थ है, जो चिंता का विषय है क्योंकि एक राष्ट्र के रूप में हमारी महात्त्वकांक्षाएँ इससे ज्यादा की मांग करती है। वैश्वीकरण के इस दौर में हमारा समाज एक अज्ञात भविष्य की ओर अग्रसर दिखाई देता है। बढ़ती जनसंख्या और सीमित संसाधनों के साथ हमारे देश को नई समस्याओं का सामना करना है। भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए, हमें ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होगी जो समस्याओं को प्रभावी ढंग से हल करने में योगदान कर सके शिक्षा समाज के लोगो को इस योग्य बनाती है कि वह लोग समाज में व्याप्त समस्याओं, कुरीतियों गलत परम्पराओं के प्रति सचेत होकर उसकी आलोचना करते है, और धीरे–धीरे समाज में परिवर्तन हेाता जाता है।

शिक्षा समाज के प्रति लोगों को जागरूक बनाते हुये उसमें प्रगति का आधार बनाती है। शिक्षा समाज का स्वरूप बदलकर उस पर नियंत्रण भी करती है। अभिप्रायः यह है कि व्यक्ति का दृष्टिकोण एवं उसके क्रियाकलाप समाज को गतिशील रखते है शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण में परिवर्तन कर उसके क्रियाकलापों में परिवर्तन कर समूह मन का निर्माण करती है और इससे अत्यव्यवस्था दूर कर उपयुक्त सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करती है व्यक्ति सुनहरे जीवन के पथ पर तभी अग्रसर हो सकता है, जब उसके पास शिक्षा रूपी अमोघ अस्त्र होगा इसके द्वारा ही व्यक्ति समाज को सही राह दिखा सकता है और अपने राष्ट्र को आर्थिक और सुदृढ़ रूप से एक कदम और आगे बढ़ाया जा सकता है शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व का विकास होता है।

व्यक्तित्व के विकास से तात्पर्य शारीरिक, चारित्रिक, नैतिक और बौद्धिक गुणों के विकास के साथ सामाजिक गुणों का विकास होना। विकसित व्यक्तित्व का बाहुल्य समाज की प्रगति का आधार बनता है। इसीलिए

शिक्षा हर व्यक्ति को लेनी चाहिए और उसका सही उपयोग करना चाहिए। एक अच्छे समाज के लिए हर एक व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण होता है और ये हम तभी सही मायने में समझ सकते है जब हम शिक्षा को समझेंगे।

कूट शब्द :- शिक्षा, समाज, व्यक्ति, महत्वपूर्ण, योगदान, ज्ञान, टेक्नोलॉजी, चुनौतियों, महिलाये, सामाजिक।

प्रस्तावना :-

हमारे देश में शिक्षा का महत्व तभी है जब हम शिक्षा को समझे और शिक्षा जैसे आभूषण की महत्वपूर्णता को समय के साथ उपयोग करें स्कूल और कॉलेज से शिक्षा मिलती है लेकिन वो तभी सही मायने में उपयोग होती है। जब हम उसको पारस्परिक जीवन में उपयोग करे शिक्षा का अर्थ सिर्फ स्कूल में मिलने वाली शिक्षा से नहीं होता है बल्कि हर वो चीज़ शिक्षा है जहां हमें थोड़ा भी ज्ञान प्राप्त होता है। जिससे हम थोड़ा और दुनिया को अपने देश को समझने की छमता बढ़ाते है। जिससे हम देश विदेश की सभी ख़बरों का पता रखते है की आखिर हम कितने आगे बढ़ गए है और हम किसी भी नई जंग के लिए तैयार है ये हौंसले हमे हमारे ज्ञान रूपी यंत्र से प्राप्त होते है जो एक नई ऊँचाई की ओर ले जाता है।

उद्देश्य :-

अतीत में, माता–पिता, बुजुर्ग और पुजारी बच्चों को वे कौशल सिखाने के लिए अनौपचारिक शिक्षा का उपयोग करते थे। जिनकी उन्हें वयस्कों के रूप में आवश्यकता होती है समय के साथ ये सबक व्यवहार के नैतिक कोड में परिवर्तित हो गए। अपनी संस्कृति और इतिहास को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए लोग कहानी कहने या मौखिक परंपरा पर निर्भर थे भाषा के माध्यम से, लोगों ने प्रतीकों शब्दों या संकेतों का उपयोग करके अपने विचारों को व्यक्त करना सीखा जैसे–जैसे प्रतीक चित्रों और अक्षरों में विकसित हुए। मानव ने एक लिखित भाषा बनाई और साक्षरता की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की। जैसे–जैसे समाजों ने बुनियादी कौशल से परे अपने ज्ञान का विस्तार करना शुरू किया, औपचारिक शिक्षा और स्कूली शिक्षा का उदय हुआ समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा मनुष्य समाज में व्यवहार करना सीखता है। समाज के मूल्य एवं मान्यताओं को समझता है तथा उनके अनुरूप कार्य करता है और वह समाज को आवश्यकता पड़ने पर आवश्यक नेतृत्व प्रदान करता है। बहुत पहले, जब कोई स्कूल या किताबें नहीं थीं, लोगों को जीवित रहने के लिए वास्तव में कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी।

उन्हें खतरनाक जानवरों और खराब मौसम जैसी चीजों का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होंने खाना ढूंढ़ने घर बनाने औज़ार और हथियार बनाने जैसे काम करके ज़िंदा रहना सीखा। उन्होंने यह भी सीखा कि कैसे बात करनी है, अच्छा व्यवहार करना है और अपने धर्म का पालन करना है। बड़ों ने बच्चों को ये महत्वपूर्ण कौशल सिखाए ताकि वे भविष्य के लिए तैयार हो सकें।

शिक्षा का कार्य :-

शिक्षा मजबूत कल्याण को बढ़ावा देने के लिए मौलिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। वैज्ञानिक सफलताओं में उल्लेखनीय प्रगति ने मानवता को विनाशकारी विपत्तियों के अभिशाप से मुक्त किया है जिसने एक बार हमारे अस्तित्व को तबाह कर दिया था। बीमारियों के अब प्रभावी ढंग से प्रबंधन के साथ, मानव स्वास्थ्य की समग्र स्थिति एक सराहनीय वृद्धि का अनुभव कर रही है। तकनीकी प्रगति के कार्यान्वयन, शिक्षा के साथ, निर्विवाद रूप से एक अधिक परिष्कृत और सुविधाजनक जीवन शैली लाया है।

बिजली और मशीनीकरण की शुरूआत ने हमारी दैनिक जिम्मेदारियों को काफी सरल बना दिया है। चंद्रमा के लिए मानव जाति की उल्लेखनीय यात्रा और पहले के अज्ञात आकाशीय पिंडों की गहन खोज ने असाधारण संभावनाओं का खुलासा किया है। इस दिशा में, शिक्षा का क्षेत्र मानवता के अधिक अच्छे के लिए अन्य ग्रहों की अप्रयुक्त क्षमता का दोहन करने के लिए एक मनोरम संभावना प्रस्तुत करता है।

मानवीय जीवन में शिक्षा का कार्य :-

शिक्षा ने मानव अस्तित्व के उन क्षेत्रों में हमारे दृष्टिकोण और रचनात्मकता का शानदार विस्तार किया है। जो पहले सीमित और प्रेरणाहीन थे दृष्टिकोण और कल्पना के इस गहन विस्तार ने हमें अंधविश्वास और विभिन्न सामाजिक दुविधाओं की बाधाओं से मुक्त करके मानव जाति के चरित्र को मजबूत किया है। समाज पर शिक्षा का प्रभाव गहरा और दूरगामी है। नियोजित शैक्षिक प्रणाली का चुनाव समुदाय की वृद्धि और प्रगति को आकार देता है। समाज की क्षमता सीधे तौर पर स्थापित शिक्षा के स्तर से जुड़ी होती है। असाधारण शिक्षा महान गुणों, सिद्धांतों और लोकाचार को बढ़ावा देती है जिससे समाज और राष्ट्र को स्मरणीय विरासत बनाने के लिए तैयार किया जाता है। उचित शिक्षा की प्राप्ति किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए एक अनिवार्य उत्प्रेरक के रूप में होती है। दरअसल, किसी व्यक्ति की वृद्धि और परिपक्वता उनकी शैक्षिक गतिविधियों के साथ गहन रूप से जुड़ी हुई है। यह एक स्थापित सत्य है कि एक समाज के भीतर शिक्षित व्यक्तियों का अनुपात जितना अधिक होगा, सक्षम और कुशल जनशक्ति का उतना ही अधिक भंडार होगा। जो अंततः एक पूरे राष्ट्र की उन्नति और उन्नति की ओर ले जाएगा।शिक्षा समाज के ताने–बाने पर गहरा प्रभाव डालती है। अपनाए गए शैक्षिक ढाँचे का चुनाव मौलिक रूप से सामाजिक प्रगति को आकार देता है। इसके अलावा, किसी समाज की क्षमता उसकी शैक्षिक प्रणाली की क्षमता से अटूट रूप से जुड़ी होती है। प्रतिष्ठित शिक्षा महान चरित्र का निर्माण करती है अमूल्य मूल्यों को स्थापित करती है नैतिक सिद्धांतों को मजबूत करती है और अमिट चरित्र की विरासत का निर्माण करने के लिए समाज और राष्ट्र दोनों को सुसज्जित करती है।

यह एक सुस्थापित तथ्य है कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए एक मूलभूत शर्त है। किसी व्यक्ति की प्रगति उनके शिक्षा के स्तर से गहन रूप से जुड़ी होती है शिक्षित नागरिकों की संख्या जितनी अधिक होगी, कुशल जनशक्ति का उतना ही बड़ा पूल उपलब्ध होगा, जिसके परिणामस्वरूप अंततः पूरे राष्ट्र की उन्नति होगी।

शिक्षा का अधिग्रहण अनुभव का प्रवेश द्वार है ज्ञान प्राप्त करने से, एक व्यक्ति जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक उपकरणों से लैस हो जाता है। इसके विपरीत, जिन लोगों में शिक्षा की कमी है, वे अपनी सीमित समझ के कारण त्रुटि के अधिक शिकार होते हैं।

इस प्रकार, शिक्षा सफलता और एक आरामदायक जीवन शैली प्राप्त करने में सर्वोपरि है क्योंकि यह जीवन के विभिन्न पहलुओं को सरल और सुगम बनाती है। शिक्षा का क्षेत्र उद्योग और विद्वानों के क्षेत्र के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने में एक शक्तिशाली साधन के रूप में कार्य करता है। शिक्षा के परिवर्तनकारी प्रभाव से धन्य लोगों को लाभकारी रोजगार के लिए आकर्षक अवसरों की प्रचुरता प्रदान की जाती है। शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति को अतिरंजित नहीं किया जा सकता है।

सामाजिक जीवन में शिक्षा का कार्य :-

समाज के निर्माण व उन्नति के क्षेत्र में विद्यालय की महान भूमिका होती है और साथ ही नई तकनीकों से दी गई शिक्षा का भी योगदान काफी हद तक समाज में बदलाब लाता दिखाई दे रहा है। जो लोगों की जिन्दगी में उनके व्यवसाय को आगे बढ़ने में और सरकार की दी गयी स्कीम का फायदा उठाने में या फिर आयकर भरकर सही तरीके से सरकार की मदद करने में लाभदायक साबित हुआ है। आज भी हम लोग आजाद होकर भी पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं हुए है। हमारे मानसिक विकास और देखने के नजरिये को बदलना चाहिए जो हमे मानसिक तनाव तो देते है लेकिन हमारी सोचने समझने की छमता छीन लेते है। अगर इंसान समाज में शिक्षित नहीं है तो वो अपनी मानसिकता को उतना ही रखता है जितना वो जनता है और एक शिक्षित व्यक्ति हमेशा अपने साथ साथ दूसरों की सोच तो समझने की छमता रखता है और वो व्यक्ति ज्यादा बलबान है जो हर परिस्थति को समझ सके हर नजरिये से चाहे वो समाज की बैठक हो या फिर राजनितिक मुद्दे या फिर कोई और महत्वपूर्ण निर्णय।

हमारे डॉ. बाबा साहब आंबेडकर ने भी कहा था की मै उस धर्म को पसंद करता हूं जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे की भावना सिखाता है इसका मतलब है की बहुत ही लम्बे अरसे से समाज में लोगों की मानसिकता को बदलने की कोसिस जारी रही लेकिन अफ़सोस यह है कि आज भी हमारे समाज में ये सभी बातें एक गहरा विषय बना हुआ है। आज भी लोग उन्हीं सब बातों में उलझे हुए है जो हमें पीछे खिचती है। सामाजिक परिवर्तन का विरोध होता है क्योंकि समाज में रूढ़ीवादी तत्व प्राचीनता से ही चिपटे रहना पसंद करते है।

शैक्षिक समस्याएं :-

स्त्रियों की शिक्षा स्वतंत्रता व समान अधिकार की भावना, स्त्रियों का आत्मनिर्भर होना, यौन शोषण पर रोक, भ्रूण हत्या की समाप्ति और ऐसे अनेक सामाजिक कुरूतियाँ है जिसमें परिवर्तन को आज भी समाज के कुछ तत्व स्वीकर नहीं कर पाते है। शिक्षा ने समाज में फैले इन कुरूतियों के परिणाम को बताने का प्रयास किया है। लोगों के बीच चेतना जागृत करने का प्रयास किया है वहीं स्त्री शिक्षा परिवार की शिक्षा है। जिस परिवार की स्त्री शिक्षित है उस परिवार की सोच, विचार, रहन–सहन में बदलाव नजर आता है और वे परिवार अपने रूढ़ीवादी विचारों को स्वीकार करना बंद कर देते है और मानवीयता, नैतिकता और सामाजिक सहिष्णुता के आधार पर एक नए सामाजिक संबंधो का निर्माण करते है। प्रत्येक कार्य के महत्व को समझते हुए उसे सम्पन्न करने का प्रयास करता है। समाज की जड़ता को समाप्त करने के शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा की अतुलनीय योगदान है। इसी का परिणाम है कि आज समाज के वे परम्परागत कोढ़ जो समाज की स्वच्छ संरचना को समाप्त कर रहा था। आज उन्नमूलन की अवस्था में है।

(1) जो व्यक्ति शिक्षा के इच्छुक है उन्हें सुविधाओं का लाभ लेने के योग्य बनाने के कार्य को संभव बनाना।

(2) शिक्षा जैसी वास्तु को विकसित करना जोकि वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण के विकास को प्रोन्नत करें और एक नए नजरिए का विकास करे।

(3) धर्म, भाषा, जाति और वर्ग, समुदाय, तथा लिंग पर आधारित पारस्परिक सहिष्णुता का सामाजिक वातावरण के निर्माण द्वारा जिस तरह शिक्षा के द्वारा समाज का विकास होता है।

उसी प्रकार सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन आता है। समाज की स्थिति में सुधार होता है। मतलब जब

समाज की दशा बदल जाती है तो शिक्षा का स्वरूप भी बदल जाता है। विद्यालय एक लघु समाज का ही रूप है क्योंकि यहां विभिन्न जाति धर्म को मानने वाले बच्चे एक साथ पढ़ने आते हैं। शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि उनमें एकता एवं प्रेम की भावना उत्पन्न हो। जिससे समाज में समानता एवं एकता की भावना बनी रहे और एक नए समाज में स्त्री और पुरुष दोनों ही आगे बढ़ सके। समाज के निर्माण व उन्नति के क्षेत्र में विद्यालय की महान भूमिका होती है और साथ ही नई तकनीकों से दी गई शिक्षा का भी योगदान काफी हद तक समाज में बदलाव लाता दिखाई दे रहा है। जैसेकि नई टेक्नोलॉजी का उपयोग करना उसके माध्यम से पढ़ना या फिर कुछ नया व्यापार के बारे में जानकारी लेना और व्यापार शुरू करना या स्मार्टफोन और लैपटॉप कंप्यूटर जैसे उपकरणों का उपयोग करके शुल्क ट्रान्सफर करना या कोई अन्य काम के लिए उपयोग करना बिना शिक्षा ये सारी चीज़ों का लाभ उठाना असंभव है।

इसीलिए शिक्षा समाज में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है शिक्षा के लिए कोई उम्र नहीं होती। जब भी व्यक्ति चाहे कुछ नया सिख सकता है। राजनीति की समझ एक अलग नजरिया देती है अपने समाज और लोगों को समझने का अच्छी एवं बुरी चीज़ों को जानने का समाज में नई उपयोगी चीज़ो का लाभ उठाने या तो फिर सरकार की किसी भी नई स्कीम या उपकरणों को सही मायने में उपयोग करने का तरीका शिक्षा हर चुनौतियों से लड़ने का साहस देती है। आज के समय में हम बहुत आगे बढ़ चुके है। नई तकनीकों के साथ आज हर क्षेत्र में हमारे पास कुछ नई टेक्नोलॉजी है जिससे हम समय बचत के साथ नए अनुभव से भी वाकिफ होते है और उस ज्ञान का उपयोग हम खुद को और बेहतर बनाने एवं देश को कुछ नया देने की छमता रखते है जिससे हम समय बचत के साथ नए अनुभव से भी वाकिफ होते है।

उस ज्ञान का उपयोग हम खुद को और बेहतर बनाने एवं देश को कुछ नया देने में मदद करते है जैसे की शिक्षा के क्षेत्र में नए विचारो की खोज करना उनपे रिसर्च करना और अपना योगदान देना या फिर नए टेक्नोलॉजी के उपयोग से नई तकनीकों जैसे की पैसे का अदान प्रदान ऑनलाइन करना या फिर ऑनलाइन टिकट बुक करना। इस ऑनलाइन इंटरनेट के दौर में शिक्षा देने या लेने के बहुत से माध्यम है जिससे किसी भी वर्ग के लोग बिना हिचकिचाए आगे बढ़ रहे है लेकिन कहीं न कहीं ये निराशा भी है कि आज के दौर में भी हम लोग समाज की बनाई सोच के शिकार हैं। ये कोई बीमारी से कम नहीं लोग आज भी शिक्षा से ज्यादा दिखावे को महत्व देते है। लड़की और लड़के में भेदभाव करते है। आज भी स्त्रियों तथा लड़कियों को खुलकर आगे आने नहीं दिया जाता। उनको बहुत सही जगहे पे पढ़े लिखे होने के बाद भी नौकरी नहीं करने दी जाती जबकि सबका बराबर का अधिकार होना चाहिए सबसे पहले हमें यही सीखना चाहिए। शिक्षा से होने वाले लाभ तकनीकी प्रगति के कार्यान्वयन, शिक्षा के साथ, निर्विवाद रूप से एक अधिक परिष्कृत और सुविधाजनक जीवन शैली लाया है।

बिजली और मशीनीकरण की शुरूआत ने हमारी दैनिक जिम्मेदारियों को काफी सरल बना दिया है। चंद्रमा के लिए मानव जाति की उल्लेखनीय यात्रा और पहले के अज्ञात आकाशीय पिंडों की गहन खोज ने असाधारण संभावनाओं का खुलासा किया है। इस दिशा में, शिक्षा का क्षेत्र मानवता के अधिक अच्छे के लिए अन्य ग्रहों की अप्रयुक्त क्षमता का दोहन करने के लिए एक मनोरम संभावना प्रस्तुत करता है। शिक्षा ने मानव अस्तित्व के उन क्षेत्रों में हमारे दृष्टिकोण और रचनात्मकता का शानदार विस्तार किया है जो पहले सीमित और प्रेरणाहीन

थे।

क्षेत्र सर्वेक्षण :-

क्षेत्र सर्वेक्षण करने के बाद एक चिंतित परिणाम सामने आया की आज भी कुछ अपंग मानसिकता से ग्रस्त लोग आज भी बस खुद ही कमाना चाहते है और अपने घर की स्त्रियों को घर में रखना चाहते है। अगर ये ऐसे ही चलता रहा या इसमें बढ़ौतरी हुई तो वापस से हमे पीछे के दौर में पहुचने में समय नहीं लगेगा। हमारे सर्वे करने का मतलब था कि क्या आज भी लोग उसी मानसिकता के साथ है। वो बराबर का दर्जा नहीं दे सकते या फिर ये बीते हुए समय का एक सच है कुछ मजदूरों एवं कुछ स्कूल बारहवीं पढ़े हुए लोग जिन्होंने शिक्षा तो ली लेकिन सिर्फ नाम की जिससे उन्होंने कुछ नहीं सीखा और कुछ उच्च शिक्षा लिए हुए लोग जिन्होंने शिक्षा का सही उपयोग किया इन सबसे एक सवाल किया गया कि क्या आपकी पत्नी काम करना चाहे तो क्या आप उन्हें काम करने देंगे तो इस सवाल के परिणाम बहुत ही चौकाने वाले आये जिन्होंने बस थोड़ा पढ़ा और नहीं भी पढ़ा वो मजदूर है फिर भी उनका कहना था की वो और उनके घर की महिलाये काम करती है जिससे उनका गुजारा होता है और वो अपने बच्चों को पढ़ने के लिए स्कूल भी भेजते है क्योंकि उनका बच्चा बड़ा होकर कुछ अच्छा काम कर सके। वही कुछ नाम के पढ़े हुए लोगों का मानना है कि उनके घर की औरते काम नहीं करेंगी क्योंकि वो खुद कमा सकते है। इसलिए महिलाओ को घर में रहना चाहिए और जब पुरुष कमाने लायक ना हो तभी महिलाओं को काम करना चाहिए इस मानसिकता के लोग कभी भी बराबर का दर्जा नहीं देना चाहते। उनका मानना है कि महिलाओं को घर में होना चाहिए लेकिन क्यों ये सवाल आज भी है और आगे भी होगा अगर शिक्षा के महत्व को नहीं समझा गया। लोगों को ज्ञान का सही उपयोग करना सीखना चाहिए जिसकी जड़ आपके मस्तिक से होते हुए जाती है। वही कुछ लोगों का मानना है कि वो कोई भी फर्क नहीं मानते वो खुद की मर्जी है अगर महिलाये काम करना चाहे तो वो कर सकती है।

सवाल : क्या आपकी पत्नी काम करना चाहे तो क्या आप उन्हें काम करने देंगे?

सर्वे के आकड़े के अनुसार जो ज्यादा पढ़े हुए लोग है उनमें से ७० प्रतिशत लोग ये मानते है कि सभी को शिक्षा का सही उपयोग करना चाहिए और काम करना चाहिए। चाहे वो आदमी हो या फिर महिलाये वही आकड़ों के मुताबिक ५० प्रतिशत बिना पढ़े हुए लोगों का मानना है कि महिलायें तथा पुरुष दोनों ही काम करते है जिससे वो अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला सके और अपना गुजारा कर सके। वही स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त किये हुए लोगों का अकड़ा सिर्फ ३० प्रतिशत है। यह आकड़ो से ये भी पता लगता है कि घर का माहौल तथा व्यक्ति के सोचने का तरीका भी एक पहलु है शिक्षा के महत्व को समझने के लिए।

निष्कर्ष :-

आज भी लोगों को दिक्कत है महिलाओं के बहार काम करने से उनका कहना है कि जब वो है तो महिलाये क्यों काम करे जबकि हर व्यक्ति को काम करना चाहिए उसको शिक्षित होना चाहिए।

हमारे डॉ. बाबा साहब आंबेडकर ने भी कहा था कि मैं उस धर्म को पसंद करता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे की भावना सिखाता है।

इसका मतलब है कि बहुत ही लम्बे अरसे से समाज में लोगों की मानसिकता को बदलने की कोशिश जारी रही लेकिन अफ़सोस यह है कि आज भी हमारे समाज में ये सभी बातें एक गहरा विषय बना हुआ है। आज

भी लोग उन्ही सब बातो में उलझे हुए है जो हमें पीछे खिचती है।

वहीं समाज को देखते हुए गरीब मजदूर खुद काम करते हैं और उनकी महिलाएं भी क्योंकि वो ज्यादा पैसा कमा सके और अपनी जरुरत की चीज़ो को पूर्ण कर सके।

पढ़े लोगों में और अनपढ़ लोगों में यही फर्क है कि वो किसी दूसरे के नजरिये को कभी समझ नहीं पाते और झूठी धारणायें बनाते है और कभी आगे नहीं बढ़ पाते जबकि एक पढ़ा लिखा व्यक्ति खुद को भी समझता है और समाज को भी और दूसरे लोगों के नजरिये को भी जो की शिक्षा से ही संभव है।

हमेशा शिक्षा को बढ़ावा देते हुए जिनके घर में जो भी अशिक्षित है। उनको शिक्षित करने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि वो एक अच्छे समाज का हिस्सा बन सके।

संदर्भ :-

1. https://www.historyjournal.net/article/146/4&2&3&765.pdf
2. Sabse pahele Bharath a book review https://uou.ac.in/sites/default/files/slm.BAED&101.pdf
3. https://ijsrset.com/paper/5654.pdf
4. http://www.parentsassembly.com/purpose&of&education&in& society/
5. https://www.hindivibhag.com
6. https://www.yourarticlelibrary.com/education/role&of&education&in&society/76836